3.सीमन्तोन्नयन

सीमन्तोन्नयन-तीसरा सीमन्तोन्नयन सँस्कार है । यह सँस्कार गर्भ के चौथे, छठे या आठवें मास में किया जाता है । सीमन्त+उन्नयन= सीमन्तोन्नयन । सीमन्त का एक अर्थ इस प्रकार है जो अष्ठाध्यायी के एक सूत्र में कहा - "सीमन्त: केशेषु" अर्थात्केशों को विभक्त करने वाली मध्य रेखा सीमन्त कहलाती है । सम्भवत: यही कारण है कि इस सँस्कार में पति द्वारा कंघा से पत्नी के केशों को ऊपर उठाकर जुड़ा बांधने का विधान है । ऊपर उठाना ही उन्नयन हुआ । सीमन्त का दूसरा अर्थ "मस्तिष्क" भी है । सुश्रुत (शारीर स्थान-६) के अनुसार खोपड़ी (शिर) पाँच भागों में बँटा हुआ है । उसकी सँधियों (जोड़ों) को भी सीमन्त कहते हैं । खोपड़ी भी मस्तिष्क के अर्थ में सामान्यत: लिया जाता है जो पाँच सीमन्तों में विभक्त सिद्ध हुआ । मूलत: मस्तिष्क के पूर्ण विकास हेतु यह सँस्कार किया जाता है । सीमन्तोन्नयन सँस्कार का आन्तरिक पक्ष में यह अर्थ सर्वथा सार्थक है । सीमन्तोन्नयन सँस्कार को करने का समय गर्भ-स्थिति के चौथे, छठे या आठवें मास में है । वस्तुत: गर्भ में पलने वाली संतान का मस्तिष्क चौथे मास में बनना शुरु हो जाता है । इसी तरह पाँचवें में मन, छठे में वुद्धि, सातवें में अँग-प्रत्यँग का विकास और आठवाँ मास बड़ी सावधानी का है क्योंकि इस मास में "ओज" अस्थिर होता है । सुश्रुत में ही यह भी कहा गया है- " अष्ठमे मासे जातस्य हरन्त्योजो निशाचरा: " अर्थात्आठवें मास में जन्म होने पर ओज का हरण होता है फलत: जन्म लेनी वाली संतान प्राय: मर जाती है । यही कारण है कि सबके लिये चौथे से आठवें मास तक अधिक सावधानी तथा संयम की जरूरत है । मस्तिष्क एवं मस्तिष्क से जुड़े मन, वुद्धि, चित्त आदि के समुचित विकास हेतु ही यह सँस्कार करने का प्रयोजन है ।

जैसा कि विचार किया कि छठे-सातवें मास में वुद्धि व सब अँगों का विकास होता है वैसे ही आठवें मास में यद्यपि ओज अस्थिर होता है पर गर्भिणी स्त्री के अन्दर दो हृदय बन जाते हैं; एक उसके स्वयं का और दूसरा उसकी होने वाली संतान का । अत: वह स्त्री दौहृदया या दौहृदिनी कहलाती है । जानने की बात है कि बच्चे का हृदय और माता का हृदय दोनों रस वाहक धमनियों से जुड़े होते हैं । फलत: माता की ईच्छा ही गर्भस्थ बच्चे की ईच्छा बनती होती है । इस तरह माता का मन, विचार, संस्कार, आहार-विहार आदि सब आचरण बच्चे के मन, वुद्धि, विचार संस्कार, हृदय और यहाँ तक कि सब अँग-प्रत्यँग पर गहरा प्रभाव डालते हैं । इसी कारण यह सँस्कार गर्भ-स्थिति के चौथे, छठे या आठवें मास में करना निर्देशित है । इसकी पूरी वैज्ञानिकता को समझने के लिये हमें इसकी एक-एक विधि को जानना होगा । आगे आने वाली कड़ी में हम इन्हें विस्तार से जानेंगे ।

१. शुक्ल पक्ष में सँस्कार हो-शुक्ल पक्ष चन्द्रमा प्रधान पक्ष है । "चन्द्रमा मनसो जात..." ऋग्वेदीय पुरुष सूक्त- मन का सम्बन्ध चन्द्रमा से माना जाता है । चन्द्र तुल्य मन शीतल, प्रकाशित और स्थिर हो । मन का सीधा सम्बन्ध वुद्धि और हृदय से भी है । हमारी संकल्प शक्ति को बढ़ाने और बनाये रखने में मन-वुद्धि-हृदय का महत्त्वपूर्ण योगदान है । इन्हीं कारणों से यह सँस्कार शुक्ल पक्ष के मूल आदि पुरुष नक्षत्रों से युक्त काल में किया जाना लिखा है । उल्लेखनीय है कि जातकर्म सँस्कार और अन्त्येष्टि सँस्कार को छोड़कर सभी सँस्कारों को प्राय: शुक्ल पक्ष में ही करने का निर्देश है । मूल भाव यही है कि बच्चे को भरपूर विकास व निर्माण में शुक्ल पक्ष निश्चित रुप से ज्ञान, प्रकाश, विकास व पूर्णता का प्रेरक है । हम अपनी संतान से इन्हीं गुणों की अपेक्षा रखते हैं । चन्द्रमा जब पुरुष नक्षत्रों से युक्त होता है तब ऋतु प्राय: संतुलित होती है । इसका भाव यह है कि आने वाली संतान में समता-विषमता का संतुलन बने और वह जीवन में हर ऊँची-नीची अवस्थाओं का सामना कर संसार में सफलता पाये ।

२. पति द्वारा केशों का जुड़ा बाँधना-यहाँ प्रथम संकेत तो यह है कि पत्नी/ स्त्री केशों वाली हो । केशों वाली स्त्री सौन्दर्यशालिनी होती है । वेदों में भी कहा-" तमुग्रव: केशिनी: सं हि रेभिरे"-ऋग्वेद-१.१४०.१८, केश दँहिणी: .... केशवर्धनीम्" -ऋग्वेद-६.२१.३ अर्थात्स्त्रियाँ केशों वाली होकर सौदर्यशालिनी बनें । केश होगा तभी तो जुड़ा बन्धेगा । जुड़ा सँगार के लिये स्त्रियांँ अवश्य बाँधती हैं पर यहाँ यह केवल सँगार ही उद्देश्य नहीं है अपितु मन-वृत्तियों को नियन्त्रण में लेना है । पत्नी अपनी मन-वृत्तियों को समेट कर सौंदर्य के साथ पति के ही प्रति पूर्ण प्यार समर्पित करने का व्रत लेती है । पति के मन की प्रसन्नता को समझती है और प्यार का पूर्ण समर्पण उढ़ेल देती है । इसी कारण यहाँ पत्नी के केशों का जुड़ा पति द्वारा बाँधने का विधान है । इस विधि द्वारा पति जरूरत पड़ने पर पत्नी की सेवा की जिम्मेवारी भी लेता है । गर्भस्थ संतान की पूरी रक्षा व उसके पूर्ण विकास के क्रम में सहयोग के लिये पत्नी के लिये पति से नजदीक और कोई नहीं हो सकता जो अपनी संतान के सुख हेतु उसके अत्यन्त निकट अनुभव करता हो । ऐसी अवस्था में पति ही पत्नी व संतान के लिये सम्मान, सेवा, सहयोग, प्रेम व दायित्व लेने में सक्षम हो सकता है । पति तुल्य प्यार, सेवा व समर्पण बाहर का कोई सँगार-विशेषज्ञ (हेयर-ड्रेसर) या घर की ही कोई अन्य दक्ष स्त्री या पुरुष भी सेवा भाव में इतना समर्पण व निकटता की अनुभूति नहीं दे सकता । अब रही केशों में सुगन्धित तेल डालकर जुड़ा बाँधना सो यह है कि पति जब पत्नी के केशों में सुगन्धित तेल डालकर कंघा से बालों को ऊपर करता है तो यह आने वाली संतान के मस्तिष्क-उन्नयन भाव को दर्शाना है । ऐसा करने से खोपड़ी का तन्तु-तन्तु प्रभावित होता है जिससे पत्नी के मन में जो प्रसन्नता आती है वह गर्भस्थ संतान के मन-मस्तिष्क को भी प्रभावित करता है । तेल की भीनी-भीनी सुगन्ध स्त्री के मन को प्रसन्नता देती है । जैसा कि पूर्व कह आये हैं कि खोपड़ी के अन्दर ही मस्तिष्क व वुद्धि का विकास हो रहा है,

इस कारण इस विधि से केवल मानसिक व वौद्धिक प्रसन्नता ही नहीं वल्कि उन्का समुचित विकास की भावनाओं को लेकर पत्नी के लिये एक पति और संतान के लिये एक पिता उनकी रक्षा व सेवा की पूरी जिम्मेवारी ले रहा है । पति द्वारा जुड़ा बाँधने क एक अर्थ यह भी है पत्नी महसुस करे कि आने वाली संतान की नींव मानो पक्की हो गयी है । हर वार आने वाली संतान की स्थिति में यही भाव दुहराया जायेगा पर आन्तरिक रुप से पत्नी (माँ) को ही संतान के संतुलन के लिये हमेशा तैयार रहना होगा । यहाँ गुलर वा अर्जुन वृक्ष की शलाका अथवा शाही के काँटों से जुड़ा निकालने के लिये कहा । इनसे बना कँघा या इनसे मिलते-जुलते गुण-धर्म के बने कँघा का प्रयोग सम्भावित है । वस्तुत: गुलर एक फलदार वृक्ष है । अर्जुन वृक्ष हृदय-रोग निवारक है । शाही के काँटों में मजबूती और शुद्धता मानी जाती है । इस प्रकार बालक या बालिका जीवन में सदा फले-फुले, हृदयशाली अर्थात्मजबूत, निरोग व शुद्ध हृदय से युक्त हो ।

३. जुड़ा संवारते हुये निकटतम नदी का नाम लेना- " सोम एव नो राजेमा मानुषी: प्रजा :.....असौ " प्रस्तुत मंत्र का उच्चारण कर मंत्रगत्"असौ" पद की जगह किसी प्रवाहित नदी का नाम लें । तात्पर्य यह है कि बच्चे का मन चन्द्रमा की तरह शाँत एवं नदी की तरह मर्यादित व प्रवाहित हो । जीवन में कितनी ही आशा-निराशा आती है । जैसे चाँद पूर्णिमा में प्रकाशपूर्ण एवं अमावश्या में अन्धेराभरा होता है, नदी बरसात में जलमग्न और गर्मी में सुखी होती है, पर हर हाल में चाँद या प्रवाहित नदियाँ संतुलन बनाकर रखती हैं वैसे ही होने वाली संतान भी जीवन के हर हाल में संतुलित रहे ।

४. घृत में मुख देखना- हवन में प्रयुक्त घी से जो भाप बनता है, वह नश्वार/नासिका द्वार से गर्भिणी के भीतर जाकर गर्भस्थ संतान के मस्तिष्क को पुष्ट करता है । वस्तुत: स्त्री सदा समाज में सुन्दरता का प्रतीक मानी जाती है । घी में अपना सुन्दर मुखड़ा ही देखती है और इससे भी सुन्दर अपनी संतान चाहती है । तभी स्वयं का मुख घी में देख पति द्वारा पूछे जाने पर कि "किं पश्यसि ? ", उत्तर देती है कि " प्रजां पश्यामि" = मैं अपनी सुन्दर संतान देखती हूँ और आगे भी कहती है-" पशून्पश्यामि, सौभाग्यं पश्यामि, पत्यु: दीर्घायु: पश्यामि " घर में गाय आदि पशु, सौभाग्य और अपने प्रिय पति के दीर्घ आयु भी देखती हूँ । गर्भिणी जहाँ बच्चे की माँ बन रही है, वहीं गृह-देवी भी है अत: पशु आदि धन से दूध-घृत आदि सुखों को चाहती है । वह घर की शोभा है तो सौभाग्य चाहती है और पति की धर्म पत्नी है तो अपने पति/गृह स्वामी की लम्बी आयु चाहती है । इन्हीं चाहतों और प्राप्तिओं के साथ घर में एक देवी पत्नी, माँ या किसी भी रुप में सदैव घर की पूजा का रुप होती है । इसी कारण वैदिक परिवार में गृह
पत्नी धर्म पत्नी मानी जाती है ; सदा पूजनीय व मान्य होती है ।

५. खिचड़ी की आहुति देना- यहाँ खिचड़ी की आहुति भी औषधि के रुप में प्रयुक्त होती है । खिचड़ी मूँग और चावल की बनती है । इस खिचड़ी को पिघले गो घृत में डालकर इसकी आहुति देना लिखा है । उक्त अन्न सुपाच्य होता है जो गर्भिणी स्त्री के लिये पूर्णतया अनुकूल है । मूँग तथा चावल तीव्र पीघले गो घृत में डूबकर चमकने लगते हैं । अर्थात्होने वाली संतान सदा चमकती रहे; सुन्दर रहे । यह पकी हुयी खिचड़ी घृत में मिलकर और पुष्ट हो जाती है जो गर्भिणी स्त्री के लिये थोड़ी भी काफी शक्तिदायक हो जाती है । आहुति में पड़ी खिचड़ी का भाप गर्भिणी स्त्री के भीतर जाकर संतान के मस्तिष्क, वुद्धि, मन तथा हृदय के विकास में सहायक होता है । शेष खिचड़ी को स्त्री बाद में अपनी रुची अनुसार थोड़ा-थोड़ा करके खा लेती है । इससे उसे गर्भस्थ शिशु के पोषण में मदद मिलती है ।

६. आशीर्वाद-“ वीरसूस्त्वं भव , जीवसूस्त्वं भव, जीवपत्नी त्वं भव ” यह गोभिल्य गृह्यसूत्र से लिया गया है । विद्वान्पुरोहित तथा सब उपस्थित स्त्री-पुरुष भद्र जन द्वारा यही आशीर्वाद दिया जा रहा है कि वह स्त्री वीर संतान को जन्म दे, जीवित संतान दे और इस तरह आगे भी संतान देने वाली बनी रहे ।

इस प्रकार इन सारी वैदिक मान्यताओं से मण्डित यह सँस्कार सम्पन्न करवाया जाता है जो श्रेष्ठ संतानों के लिये अत्यन्त उपयोगी है । इसके लिये हमें विद्वान् आचार्य कर्मकाण्ड प्रवीण पुरोहित से सम्पर्क करना उचित है ।